15/9/20
Tuesday

समाज शास्त्र प्रतिष्ठा
(ग्रामीण समाज शास्त्र)

Problem of Rural india Social Economic and Rural Unrest -
कृषि अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित समस्याएं, अशांति,

From -
- Dr Arun Kumar
Reader
Asstt of Sociology
Shivnath College Sasaram

सामान्य कारण -

(1) कृषि में लोगों की बहुत बड़ी संख्या का कार्यरत होना - भारतीय कृषि की असली समस्या बहुत अधिक लोगों का इस पर निर्भर होना है। सन् 1901 से कृषि पर निर्भर रहने लोगों का अनुपात 72% था जो 2013 में भी 58% पर बना हुआ है यद्यपि कृषि में लगी आबादी की प्रतिशत संख्या में लगभग 14% का परिवर्तन हुआ है जनसंख्या में हुई स्वाभाविक वृद्धि को उद्योगों में खपाया नहीं जा सका

(2) निरुत्साहक ग्रामीण वातावरण - सामान्यतः भारतीय कृषि अशिक्षित, अज्ञानी, अन्धविश्वासी एवम् रूढ़िवादी है। इसके अतिरिक्त वह जाति प्रथा और संयुक्त परिवार के प्रथाओं से जकड़ा हुआ है। अन्धविश्वास और भाग्यवाद के कारण यह खेती के पुराने तरीकों से ही पूर्णतया सन्तुष्ट है। आर्थिक प्रगति का विचार उसे प्रेरित नहीं करता इस सम्बन्ध में स्थिति में धीरे-2 परिवर्तन हो रहा है।

(3) अपर्याप्त फार्म - भिन्न सेवाएं - भारतीय कृषि को फार्म भिन्न सेवाओं अर्थात वित्त और विपणन की व्यवस्था आदि की अपर्याप्तता के कारण परेशानी उठानी पड़ी है। या तो ये सुविधाएं सर्वथा विद्यमान ही नहीं हैं या बहुत महंगी है उदाहरणतया, कुछ समय पहले तक कृषकों को रुपया उधार लेने के लिए गांव के साहूकारों पर निर्भर रहना पड़ता था जो अत्यधिक ब्याज पर उधार देते थे। एक बार रुपया उधार लेने पर किसान को अपनी जमीन तक बेचनी पड़ जाती थी और वह भूमिहीन मजदूर बनकर रह जाता था।

—2

Scanned by TapScanner

इसी प्रकार पुराने समय पहले तक कृषकों को माल संग्रह करने और विपणन की सुविधाएँ प्राप्त नहीं थी बेचने के लिए माल मण्डी में लाने पर उन्हें बीक व्यापारियों और दलालों द्वारा ठग लिया जाता था इस प्रकार भारत में कृषि के पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारण कार्य मिली सेवाओं की अपर्याप्तता है।

संस्थात्मक कारण -

(1) जोत का आकार - भारत में जोत का औसत आकार बहुत छोटा है अर्थात पाँच एकड़ से भी कम। ये जोतें न केवल छोटी हैं बल्कि छोटे-2 टुकड़ों में बंटी हुई हैं।

(2) भूमिदारी की रीति - कृषि की कम उत्पादकता का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण उचित प्रोत्साहन का अभाव रहा है जमींदारी तथा भूस्वामित्व की - व्यवस्थाओं में अधिकतर कृषक उस जमीन का स्वामी - नहीं होता था जिसे वह जोतता है।

टेक्नोलॉजीकल कारण -

(1) उत्पादन की पिछड़ी तकनीक - भारतीय कृषक उत्पादन की पुरानी और अक्षम प्रणालियों तथा तकनीकों का प्रयोग करते चला आ रहा है। निर्धनता एवं परम्परावादिता होने के कारण वह पश्चिमी देशों में और जापान में बड़े पैमाने पर अपनाई गई आधुनिक तकनीकों को नहीं अपना सका।

(2) अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ, भूमि बीज खाद और कृषि - उपकरण आदि में सुधार का तब तक कोई लाभ नहीं - जबतक इनको लाभ-2 सिंचाई की - उचित और नियमित व्यवस्था न की जाए।

जोतों के छोटे आकार के कारण - भारत में जोतों के छोटे आकार होने के कारण निम्न है।

(1) देश की बढ़ती हुई आबादी - बढ़ती हुई आबादी को जोतों के आकार की लघुता का महत्वपूर्ण कारण कहा जा सकता है। आबादी में हुई वृद्धि के कारण भूमि के और अधिक टुकड़े होते जाते हैं जिसके कारण ये - जोतों का आकार छोटा होता जाता है

Scanned by TapScanner

उत्तराधिकार का नियम - भारत मे जोतो के आकार की लघुता का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण उत्तराधिकार का नियम है, सभी लड़के और लड़कियां भी पैतृक सम्पत्ति मे समान भाग के अधिकारी होते है प्रत्येक पीढ़ी के बाद बड़े कृषि क्षेत्र भी टुकड़ो मे बंट जाते है

(3) संयुक्त परिवार प्रणाली का पतन - भारतीय जोतो के छोटे होने के कारण संयुक्त परिवार का विघटन है। औद्योगीकरण के प्रभाव नगरो और स्मार्ट सिटी के विकास और शिक्षा तथा संचार के प्रसार के परिणामस्वरूप संयुक्त प्रणाली विघटीत हो गई

(4) हस्तशिल्प और ग्रामोद्योग का पतन - भारत मे छोटे-आकार की जोतो का एक और उल्लेखनीय कारण ग्राम हस्तशिल्प का पतन है

(5) ग्रामीण ऋण और देशी साहूकार - गाँवो मे देशी साहूकार वर्ग द्वारा किसान को ऋण देने का एकमात्र उद्देश्य उससे जमीन हथिया लेना है ये साहूकार किसान को उधार लेने के लिए प्रोत्साहित करते है और अनेक अनुचित उपायो द्वारा उससे भारी ब्याज वसूल करते है सुखा एवम् सरकारी कर्ज के कारण किसान आत्महत्या कई राज्यो मे कर रहे है। इस कारण सरकार के प्रति किसानो मे घोर अशांति व्याप्त है।

(6) भूमि के साथ लगाव - किसान का भूमि के साथ लगाव भारत मे खेती के छोटे होने के कारणो मे से एक है भारतीय किसान केवल जीविका का साधन ही नही समझता प्रतिष्ठा और सम्मान का आधार भी समझता है परिणामतः प्रत्येक व्यक्ति पैतृक भूमि मे हिस्सा पाना चाहता है और इसके कारण खेती का आकार छोटा हो जाता है

Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
(Sasaram)
15/9/20

Scanned by TapScanner